Frontiers in Social Sciences Research Volume 2, Issue 7, July 2026
ISSN: 3108-0324
DOI: https://doi.org/10.24113/kn14gr57

"भारतीय हस्तकरघा एवं हस्तनिर्मित वस्त्रों की वैश्विक मांग तथा निर्यात में उनकी भूमिका "

विवेक शर्मा

शोधार्थी

अर्थशास्त्र विभाग

इंदिरा गांधी राष्ट्रीय जनजातीय विश्वविद्यालय

अमरकंटक, मध्य प्रदेश, भारत

viveksh1998@gmail.com

प्रोफेसर रक्षा सिंह

प्रोफेसर एवं विभागाध्यक्ष

अर्थशास्त्र विभाग

इंदिरा गांधी राष्ट्रीय जनजातीय विश्वविद्यालय

अमरकंटक, मध्य प्रदेश, भारत

raksha.singh@igntu.ac.in

सारांश

भारतीय हस्तकरघा उद्योग न केवल देश की सांस्कृतिक पहचान का जीवंत प्रतीक है, बल्कि यह लाखों बुनकर परिवारों की आजीविका का प्रमुख आधार भी है। कृषि के पश्चात यह देश में सर्वाधिक रोजगार प्रदान करने वाला असंगठित क्षेत्र है, फिर भी वैश्वीकरण, मशीनीकृत वस्त्रों की प्रतिस्पर्धा तथा बदलती उपभोक्ता प्राथमिकताओं के दबाव में यह उद्योग निरंतर चुनौतियों का सामना कर रहा है। प्रस्तुत अध्ययन "भारतीय हस्तकरघा एवं हस्तनिर्मित वस्त्रों की वैश्विक मांग तथा निर्यात में उनकी भूमिका" विषय पर केंद्रित है, जिसका उद्देश्य द्वितीयक आँकड़ों के आधार पर भारतीय हस्तकरघा उत्पादों की

अंतरराष्ट्रीय बाज़ार में मांग-प्रवृत्तियों, निर्यात प्रदर्शन तथा इसे प्रभावित करने वाले आर्थिक व नीतिगत कारकों का विश्लेषण करना है। अध्ययन वस्त्र मंत्रालय, DGCIS, हस्तकरघा निर्यात संवर्धन परिषद, विश्व व्यापार संगठन तथा विश्व बैंक जैसे प्रामाणिक स्रोतों से प्राप्त आँकड़ों पर आधारित है, तथा हिंदी एवं अंग्रेज़ी माध्यम के उपलब्ध शोध साहित्य की गहन समीक्षा के पश्चात तैयार किया गया है। समीक्षा से स्पष्ट होता है कि निर्यात सहायता कार्यक्रमों, क्षेत्रीय प्रतिस्पर्धात्मकता तथा वैश्विक रचनात्मक अर्थव्यवस्था के मध्य संबंधों पर पर्याप्त एकीकृत अध्ययन अनुपलब्ध है, जो एक महत्त्वपूर्ण शोध अंतराल को चिन्हित करता है। यह अध्ययन इसी अंतराल को भरने का प्रयास करते हुए यह प्रस्तुत करता है कि मजबूत नीतिगत हस्तक्षेप, डिज़ाइन नवाचार तथा डिजिटल व्यापार के द्वारा भारतीय हस्तकरघा उत्पादों की वैश्विक स्वीकार्यता एवं निर्यात क्षमता को नई ऊँचाइयाँ प्रदान की जा सकती हैं।

बीज शब्द : हस्तकरघा उद्योग, हस्तनिर्मित वस्त्र, वैश्विक मांग, निर्यात प्रदर्शन, बुनकर अर्थव्यवस्था, नीतिगत हस्तक्षेप

प्रस्तावना

भारत की मिट्टी में बुनकरी केवल एक व्यवसाय नहीं, बल्कि सदियों पुरानी सांस्कृतिक विरासत की जीवंत धड़कन है। चरखे की घूमती तकली से लेकर हथकरघे की खटर-पटर तक, यह ध्वनि भारतीय गाँवों की पहचान रही है। सिल्क की चमकती साड़ियों से लेकर खादी के सादगीपूर्ण वस्त्रों तक, हस्तकरघा उद्योग ने न केवल भारतीय समाज को वस्त्र प्रदान किए हैं, बल्कि लाखों परिवारों को स्वाभिमान से जीने का आधार भी दिया है। विकास आयुक्त (हस्तकरघा) द्वारा प्रकाशित चतुर्थ अखिल भारतीय हस्तकरघा जनगणना के अनुसार, यह क्षेत्र आज भी कृषि के पश्चात ग्रामीण भारत में रोजगार का दूसरा सबसे बड़ा स्रोत बना हुआ है। परंतु समय के साथ यह उद्योग कई गंभीर चुनौतियों से जूझ रहा है—मशीनीकृत वस्त्र उद्योग की तीव्र प्रतिस्पर्धा, कच्चे माल की अनियमित आपूर्ति, बिचौलियों का बोलबाला, तथा युवा पीढ़ी का इस पारंपरिक कला से दूर होता जुड़ाव।

ऐसे में एक महत्त्वपूर्ण प्रश्न उभरकर सामने आता है कि क्या भारतीय हस्तकरघा उत्पाद वैश्विक बाज़ार में अपनी उपस्थिति दर्ज करा पा रहे हैं, और यदि हाँ, तो किस सीमा तक ? तिवारी तथा शर्मा जैसे विद्वानों ने इस उद्योग की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि तथा वर्तमान चुनौतियों को बखूबी उजागर किया है, वहीं सिंह एवं गौतम, देब, गोपन एवं जुहैर जैसे शोधकर्ताओं ने निर्यात प्रदर्शन, नीतिगत सहायता तथा क्षेत्रीय प्रतिस्पर्धात्मकता के आयामों को सांख्यिकीय दृष्टिकोण से परखा है। इसके साथ ही, वस्त्र मंत्रालय, DGCIS, हस्तकरघा निर्यात संवर्धन परिषद, विश्व व्यापार संगठन तथा विश्व बैंक के आधिकारिक आँकड़े इस विषय को समझने हेतु एक ठोस आधार प्रदान करते हैं। फिर भी, साहित्य समीक्षा से यह स्पष्ट होता है कि वैश्विक मांग-प्रवृत्तियों, निर्यात प्रदर्शन तथा नीतिगत हस्तक्षेपों को समग्र रूप में जोड़कर देखने वाला अध्ययन अब तक अपेक्षाकृत सीमित रहा है—विशेषतः हिंदी भाषा में यह अंतराल और भी अधिक स्पष्ट रूप से दिखाई देता है।

इसी अंतराल को ध्यान में रखते हुए प्रस्तुत अध्ययन "भारतीय हस्तकरघा एवं हस्तनिर्मित वस्त्रों की वैश्विक मांग तथा निर्यात में उनकी भूमिका" विषय पर केंद्रित है। यह शोध द्वितीयक आँकड़ों के माध्यम से यह समझने का प्रयास करता है कि भारतीय हस्तकरघा उत्पाद अंतरराष्ट्रीय बाज़ार में किस प्रकार अपनी पहचान बना रहे हैं, कौन-से कारक इनकी निर्यात क्षमता को प्रभावित करते हैं, तथा भविष्य में इस क्षेत्र को वैश्विक स्तर पर सशक्त बनाने हेतु कौन-सी रणनीतियाँ अपनाई जा सकती हैं। यह अध्ययन न केवल आर्थिक दृष्टिकोण से, बल्कि सांस्कृतिक संरक्षण तथा ग्रामीण सशक्तिकरण की दृष्टि से भी महत्त्वपूर्ण है।

साहित्य समीक्षा :

विकास आयुक्त (हस्तकरघा), 2020

विकास आयुक्त (हस्तकरघा) द्वारा प्रकाशित चतुर्थ अखिल भारतीय हस्तकरघा जनगणना (2019–20) भारतीय हस्तकरघा क्षेत्र की वर्तमान संरचना को समझने हेतु एक प्राथमिक व प्रामाणिक स्रोत है। यह जनगणना देश में सक्रिय हथकरघों की संख्या, बुनकर परिवारों की सामाजिक-आर्थिक

स्थिति, राज्यवार वितरण, रोजगार तथा उत्पादन क्षमता का विस्तृत विवरण प्रस्तुत करती है। यह अध्ययन दर्शाता है कि हस्तकरघा क्षेत्र ग्रामीण अर्थव्यवस्था में रोजगार का दूसरा सबसे बड़ा स्रोत है, किंतु साथ ही बुनकरों की घटती संख्या, वृद्ध होती कार्यबल संरचना और आधुनिक तकनीकों के सीमित प्रवेश जैसी चुनौतियाँ भी उजागर होती हैं। यह आँकड़े प्रस्तुत अध्ययन हेतु आधारभूत पृष्ठभूमि उपलब्ध कराते हैं।

वस्त्र मंत्रालय, 2025

वस्त्र मंत्रालय की वार्षिक रिपोर्ट (2024–25) भारत सरकार द्वारा हस्तकरघा एवं वस्त्र क्षेत्र हेतु चलाई जा रही योजनाओं, बजटीय आवंटन तथा नीतिगत पहलों का विस्तृत लेखा-जोखा प्रस्तुत करती है। इसमें राष्ट्रीय हथकरघा विकास कार्यक्रम, बुनकर मुद्रा योजना, तथा निर्यात प्रोत्साहन से संबंधित योजनाओं की प्रगति का उल्लेख किया गया है। रिपोर्ट यह भी स्पष्ट करती है कि सरकार बुनकरों के कौशल विकास, डिज़ाइन नवाचार तथा बाज़ार संपर्क मजबूत करने हेतु प्रयासरत है। यह दस्तावेज़ नीति-निर्माण प्रक्रिया एवं क्षेत्र की वर्तमान वित्तीय स्थिति को समझने में सहायक है, तथा प्रस्तुत शोध हेतु नीतिगत संदर्भ प्रदान करता है।

तिवारी, 2018

तिवारी अपनी पुस्तक भारतीय वस्त्र उद्योग एवं हस्तकरघा में भारतीय वस्त्र उद्योग के ऐतिहासिक विकास तथा हस्तकरघा क्षेत्र के पारंपरिक स्वरूप का विस्तृत विवेचन प्रस्तुत करते हैं। लेखक ने प्राचीन काल से लेकर वर्तमान तक हस्तकरघा उद्योग की यात्रा, इसकी सामाजिक-सांस्कृतिक भूमिका तथा औद्योगीकरण के प्रभाव का विश्लेषण किया है। पुस्तक में यह भी बताया गया है कि किस प्रकार यह उद्योग असंगठित क्षेत्र में सिमटता गया और मशीनीकृत वस्त्र उद्योग की प्रतिस्पर्धा का सामना करने में असमर्थ रहा। यह अध्ययन ऐतिहासिक दृष्टिकोण प्रदान करता है, जो वर्तमान चुनौतियों की जड़ों को समझने में सहायक सिद्ध होता है।

शर्मा, 2021

शर्मा द्वारा रचित भारतीय हस्तशिल्प एवं हस्तकरघा उद्योग: चुनौतियाँ एवं संभावनाएँ हिंदी माध्यम में इस क्षेत्र की समस्याओं का समग्र विश्लेषण प्रस्तुत करती है। लेखक ने कच्चे माल की उपलब्धता, वित्तीय सहायता की कमी, बिचौलियों की भूमिका, बाज़ार तक सीमित पहुँच तथा युवा पीढ़ी की इस पेशे से दूरी जैसे मुद्दों को रेखांकित किया है। साथ ही, डिज़ाइन विविधीकरण, ई-कॉमर्स प्लेटफॉर्म का उपयोग तथा भौगोलिक संकेतक (GI) टैग जैसे उपायों को संभावनाओं के रूप में प्रस्तुत किया गया है। यह अध्ययन नीति-निर्माताओं तथा शोधकर्ताओं दोनों के लिए उपयोगी है और प्रस्तुत शोध की समस्या-पृष्ठभूमि को सुदृढ़ करता है।

सिंह, 2019

सिंह द्वारा किया गया भारतीय हस्तकरघा उद्योग का आर्थिक अध्ययन इस क्षेत्र के आर्थिक महत्त्व, उत्पादन संरचना तथा रोजगार सृजन क्षमता का विश्लेषण करता है। लेखक ने विभिन्न राज्यों में हस्तकरघा उत्पादन के आर्थिक योगदान की तुलना की है तथा बताया है कि किस प्रकार यह उद्योग ग्रामीण गरीबी निवारण में सहायक हो सकता है। अध्ययन में सहकारी समितियों की भूमिका, सरकारी सब्सिडी की प्रभावशीलता तथा मूल्य श्रृंखला में बुनकरों की स्थिति पर भी प्रकाश डाला गया है। यह पुस्तक प्रस्तुत शोध हेतु आर्थिक दृष्टिकोण से हस्तकरघा उद्योग को समझने में महत्त्वपूर्ण योगदान देती है।

देव , 2025

देव का अध्ययन भारत में हस्तकरघा उत्पादों की क्षेत्रीय निर्यात प्रतिस्पर्धात्मकता तथा इससे जुड़े व्यापक आर्थिक संकेतकों का परीक्षण करता है। यह शोध विभिन्न राज्यों की निर्यात प्रदर्शन क्षमता की तुलनात्मक समीक्षा प्रस्तुत करता है तथा विनिमय दर, मुद्रास्फीति एवं वैश्विक मांग जैसे कारकों के साथ इसके सहसंबंध की पड़ताल करता है। लेखक यह निष्कर्ष प्रस्तुत करते हैं कि क्षेत्रीय असमानताएँ निर्यात प्रदर्शन को महत्त्वपूर्ण रूप से प्रभावित करती हैं। यह अध्ययन मात्रात्मक विश्लेषण पद्धति पर

आधारित है और प्रस्तुत शोध हेतु क्षेत्रीय निर्यात प्रतिस्पर्धात्मकता के सैद्धांतिक ढाँचे को समझने में सहायक है।

सिंह एवम गौतम , 2021

सिंह एवं गौतम का यह अध्ययन निर्यात सहायता कार्यक्रम तथा हस्तकरघा उद्योग के निर्यात प्रदर्शन निर्धारकों के मध्य संरचनात्मक संबंध की जाँच करता है। लेखकों ने संरचनात्मक समीकरण मॉडलिंग तकनीक के माध्यम से यह स्पष्ट किया है कि सरकारी निर्यात प्रोत्साहन योजनाएँ किस सीमा तक निर्यातकों की प्रतिस्पर्धात्मकता को प्रभावित करती हैं। अध्ययन में वित्तीय सहायता, प्रशिक्षण कार्यक्रम तथा बाज़ार सूचना तंत्र को महत्त्वपूर्ण निर्धारक तत्वों के रूप में पहचाना गया है। यह शोध नीति-प्रभावशीलता के मूल्यांकन हेतु उपयोगी क्रियाविधि प्रस्तुत करता है तथा प्रस्तुत अध्ययन के पद्धतिगत आधार को मजबूत करता है।

सिंह एवम गौतम , 2022

इसी श्रृंखला में सिंह एवं गौतम का दूसरा अध्ययन निर्यात सहायता तथा हस्तकरघा निर्यातकों के प्रदर्शन के संरचनात्मक अनुसंधान पर केंद्रित है। लेखकों ने पूर्व अध्ययन के मॉडल को विस्तारित करते हुए निर्यातक संगठनों की आंतरिक क्षमताओं, जैसे प्रबंधकीय दक्षता तथा तकनीकी अनुकूलन क्षमता, को भी विश्लेषण में सम्मिलित किया है। परिणाम दर्शाते हैं कि सरकारी सहायता केवल तभी प्रभावी होती है जब निर्यातक संगठन आंतरिक रूप से भी सक्षम हों। यह अध्ययन प्रस्तुत शोध हेतु निर्यात प्रदर्शन को प्रभावित करने वाले आंतरिक व बाह्य कारकों के बीच संबंध को समझने में सहायक सिद्ध होता है।

गोपन, केके एवं बालन, 2025

गोपन, केके एवं बालन का अध्ययन यह परीक्षण करता है कि क्या भारत से हस्तकरघा निर्यात में कोई संरचनात्मक विघटन उत्पन्न हुआ है। शोधकर्ताओं ने समय-श्रृंखला विश्लेषण पद्धति का प्रयोग करते हुए विभिन्न वर्षों में निर्यात प्रवृत्तियों में आए परिवर्तनों की पहचान की है। परिणाम दर्शाते हैं कि

वैश्विक आर्थिक मंदी, नीतिगत परिवर्तन तथा प्रतिस्पर्धी देशों के उदय जैसे कारकों ने निर्यात प्रवृत्ति को महत्त्वपूर्ण रूप से प्रभावित किया है। यह अध्ययन निर्यात प्रवृत्तियों की स्थिरता एवं अस्थिरता को समझने हेतु सांख्यिकीय आधार प्रदान करता है, जो प्रस्तुत शोध के लिए प्रासंगिक है।

ज़ुहैर, 2015

ज़ुहैर का अध्ययन भारत से हस्तकरघा निर्यात की नीतियों, स्वरूप तथा व्यापार निर्धारकों का विश्लेषण प्रस्तुत करता है। लेखक ने सरकारी नीतियों के ऐतिहासिक विकास, निर्यात संवर्धन परिषदों की भूमिका तथा प्रमुख आयातक देशों के साथ व्यापारिक संबंधों की समीक्षा की है। अध्ययन में यह भी उल्लेख किया गया है कि किस प्रकार व्यापार रणनीतियाँ तथा उत्पाद विविधीकरण निर्यात वृद्धि में योगदान देते हैं। यह शोध ऐतिहासिक तथा नीतिगत दृष्टिकोण से हस्तकरघा निर्यात को समझने में सहायक है और प्रस्तुत अध्ययन हेतु पृष्ठभूमि साहित्य के रूप में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

पाई, वाडिवेल एवं चक्रवर्ती, 1995

पाई, वाडिवेल एवं चक्रवर्ती का यह प्रारंभिक अध्ययन 1980 के दशक के हस्तकरघा निर्यात प्रदर्शन का विश्लेषण करते हुए 1990 के दशक हेतु रणनीति प्रस्तुत करता है। लेखकों ने निर्यात मात्रा, मूल्य प्रवृत्तियों तथा प्रमुख बाज़ारों में हिस्सेदारी का विस्तृत विवरण दिया है। अध्ययन में यह भी सुझाव दिया गया है कि उत्पादकता वृद्धि, गुणवत्ता नियंत्रण तथा नई तकनीकों के अपनाने से निर्यात प्रतिस्पर्धात्मकता बढ़ाई जा सकती है। यद्यपि यह अध्ययन पुराना है, तथापि यह ऐतिहासिक तुलनात्मक विश्लेषण हेतु महत्त्वपूर्ण आधार प्रदान करता है और वर्तमान निर्यात रुझानों के मूल्यांकन में सहायक सिद्ध होता है।

दास एवं स्वैन, 2025

दास एवं स्वैन का अध्ययन भारत में हस्तकरघा वस्त्र उद्योग की सततता पर केंद्रित है, जिसमें अवसर, चुनौतियाँ तथा रणनीतियों का विश्लेषण किया गया है। लेखकों ने पर्यावरण-अनुकूल उत्पादन प्रक्रियाओं, पारंपरिक ज्ञान के संरक्षण तथा वैश्विक स्थायित्व मानकों के अनुपालन जैसे पहलुओं पर बल

दिया है। अध्ययन यह भी दर्शाता है कि सतत विकास लक्ष्यों (SDGs) के अनुरूप कार्य करने से हस्तकरघा उत्पादों की अंतरराष्ट्रीय बाज़ार में स्वीकार्यता बढ़ सकती है। यह शोध प्रस्तुत अध्ययन हेतु सततता एवं निर्यात प्रतिस्पर्धात्मकता के मध्य संबंध को समझने में उपयोगी दृष्टिकोण प्रदान करता है।

सक्तिवेल एवं हरिहरन, 2020

सक्तिवेल एवं हरिहरन का अध्ययन भारत में हस्तकरघा उत्पादों के निर्यात प्रदर्शन का मूल्यांकन प्रस्तुत करता है। लेखकों ने निर्यात मूल्य, मात्रा तथा प्रमुख गंतव्य देशों के आँकड़ों का विश्लेषण करते हुए विकास दर एवं अस्थिरता सूचकांक की गणना की है। अध्ययन में यह निष्कर्ष प्रस्तुत किया गया है कि निर्यात प्रदर्शन में उतार-चढ़ाव मुख्यतः वैश्विक मांग में परिवर्तन तथा प्रतिस्पर्धी देशों की मूल्य नीति से प्रभावित होता है। यह शोध मात्रात्मक आँकड़ों पर आधारित है और प्रस्तुत अध्ययन हेतु निर्यात प्रदर्शन मापन की पद्धति को समझने में सहायक सिद्ध होता है।

हस्तकरघा निर्यात संवर्धन परिषद, **2024**

हस्तकरघा निर्यात संवर्धन परिषद की वार्षिक प्रतिवेदन (2023–24) भारत से हस्तकरघा उत्पादों के निर्यात संबंधी वास्तविक आँकड़े, प्रमुख आयातक देश तथा उत्पाद श्रेणीवार निर्यात मूल्य प्रस्तुत करती है। रिपोर्ट में परिषद द्वारा संचालित बाज़ार संवर्धन गतिविधियों, अंतरराष्ट्रीय प्रदर्शनियों में भागीदारी तथा निर्यातकों को दी जाने वाली सहायता का विवरण भी शामिल है। यह दस्तावेज़ वर्तमान निर्यात प्रवृत्तियों तथा नीतिगत हस्तक्षेपों की प्रभावशीलता को समझने हेतु प्राथमिक स्रोत के रूप में कार्य करता है, तथा प्रस्तुत शोध हेतु अद्यतन सांख्यिकीय आधार उपलब्ध कराता है।

DGCIS, 2024

वाणिज्यिक असूचना एवं सांख्यिकी महानिदेशालय द्वारा प्रकाशित भारत के निर्यात सांख्यिकी आँकड़े देश के समग्र निर्यात प्रदर्शन का आधिकारिक विवरण प्रस्तुत करते हैं। इसमें उत्पाद श्रेणीवार, देशवार तथा वर्षवार निर्यात मूल्य एवं मात्रा का विस्तृत लेखा-जोखा सम्मिलित है। यह आँकड़े हस्तकरघा क्षेत्र के निर्यात योगदान को समग्र वस्त्र निर्यात के संदर्भ में तुलनात्मक रूप से समझने हेतु

आवश्यक हैं। यह स्रोत प्रस्तुत अध्ययन में प्रयुक्त द्वितीयक आँकड़ों की प्रामाणिकता सुनिश्चित करता है तथा सांख्यिकीय विश्लेषण हेतु ठोस आधार प्रदान करता है।

विश्व व्यापार संगठन, 2024

विश्व व्यापार संगठन की विश्व व्यापार सांख्यिकी समीक्षा (2024) वैश्विक व्यापार प्रवृत्तियों, प्रमुख निर्यातक-आयातक देशों तथा वस्त्र एवं हस्तशिल्प क्षेत्र में वैश्विक हिस्सेदारी का विश्लेषण प्रस्तुत करती है। यह रिपोर्ट वैश्विक आर्थिक परिस्थितियों, व्यापार नीतियों में परिवर्तन तथा महामारी-पश्चात व्यापार पुनर्संरचना के प्रभावों को भी रेखांकित करती है। भारत के हस्तकरघा निर्यात को वैश्विक संदर्भ में स्थापित करने हेतु यह स्रोत अत्यंत उपयोगी है, क्योंकि यह अंतरराष्ट्रीय प्रतिस्पर्धात्मकता तथा बाज़ार हिस्सेदारी के तुलनात्मक विश्लेषण हेतु आवश्यक वैश्विक पृष्ठभूमि प्रदान करता है।

विश्व बैंक, **2024**

विश्व बैंक के विश्व विकास संकेतक विभिन्न देशों के आर्थिक, सामाजिक तथा व्यापारिक संकेतकों का वृहद आँकड़ा-भंडार प्रस्तुत करते हैं। इसमें जीडीपी वृद्धि दर, विनिमय दर, प्रति व्यक्ति आय तथा व्यापार खुलेपन जैसे संकेतक सम्मिलित हैं, जो निर्यात प्रदर्शन के व्यापक आर्थिक निर्धारकों के विश्लेषण हेतु आवश्यक हैं। यह स्रोत प्रस्तुत अध्ययन में हस्तकरघा निर्यात तथा व्यापक आर्थिक चरों के मध्य सहसंबंध स्थापित करने हेतु द्वितीयक आँकड़ों का विश्वसनीय आधार प्रदान करता है, विशेषतः तुलनात्मक अंतरराष्ट्रीय विश्लेषण के संदर्भ में

UNCTAD, 2024

संयुक्त राष्ट्र व्यापार एवं विकास सम्मेलन की रचनात्मक अर्थव्यवस्था दृष्टिकोण रिपोर्ट हस्तशिल्प एवं पारंपरिक वस्त्र उत्पादों को वैश्विक रचनात्मक अर्थव्यवस्था के महत्त्वपूर्ण घटक के रूप में प्रस्तुत करती है। रिपोर्ट में सांस्कृतिक विरासत आधारित उत्पादों की अंतरराष्ट्रीय व्यापार क्षमता, डिजिटल प्लेटफॉर्मों की भूमिका तथा विकासशील देशों हेतु रोजगार सृजन क्षमता का विश्लेषण किया गया है। यह अध्ययन भारतीय हस्तकरघा उत्पादों को वैश्विक रचनात्मक अर्थव्यवस्था के व्यापक ढाँचे

में स्थापित करने हेतु उपयोगी है तथा प्रस्तुत शोध के लिए अंतरराष्ट्रीय नीतिगत दृष्टिकोण प्रदान करता है।

शोध अंतर :

उपर्युक्त साहित्य समीक्षा से स्पष्ट होता है कि भारतीय हस्तकरघा उद्योग पर अब तक पर्याप्त शोध कार्य हुआ है, किंतु अधिकांश अध्ययन या तो हस्तकरघा क्षेत्र की सामाजिक-आर्थिक संरचना तक सीमित रहे हैं, अथवा निर्यात प्रदर्शन के किसी एक पक्ष—जैसे नीतिगत सहायता, क्षेत्रीय प्रतिस्पर्धात्मकता या संरचनात्मक विघटन—का पृथक-पृथक विश्लेषण करते हैं। सिंह एवं गौतम, देब, गोपन तथा जुहैर जैसे विद्वानों ने निर्यात निर्धारकों की जाँच अवश्य की है, परंतु इन अध्ययनों में हस्तनिर्मित वस्त्रों की वैश्विक मांग को व्यापक अंतरराष्ट्रीय व्यापार परिदृश्य (WTO, विश्व बैंक तथा UNCTAD के आँकड़ों) के साथ जोड़कर समग्र रूप से विश्लेषित नहीं किया गया है। इसके अतिरिक्त, हिंदी भाषा में उपलब्ध साहित्य (तिवारी, शर्मा, सिंह) मुख्यतः वर्णनात्मक प्रकृति का है, जिसमें द्वितीयक सांख्यिकीय आँकड़ों के आधार पर वैश्विक मांग-प्रवृत्तियों तथा भारत की निर्यात हिस्सेदारी का व्यवस्थित सह-विश्लेषण अनुपस्थित है। अतः वैश्विक मांग, भारतीय निर्यात प्रवृत्तियों तथा नीतिगत हस्तक्षेपों को एकीकृत रूप में समझने वाला अध्ययन एक महत्त्वपूर्ण अंतराल के रूप में विद्यमान है, जिसे प्रस्तुत शोध द्वितीयक आँकड़ों के माध्यम से पूर्ण करने का प्रयास करता है।

विश्लेषण

उपर्युक्त द्वितीयक आँकड़ों तथा साहित्य समीक्षा के आधार पर भारतीय हस्तकरघा उद्योग एवं इसके निर्यात प्रदर्शन से संबंधित निम्नलिखित प्रमुख बिंदु उभरकर सामने आते हैं।

Fourth All India Handloom Census 2019-20

Table 7: Number of handloom workers by gender

Gender	Rural	Urban	Total
Male	7,78,772	1,96,961	9,75,733
	26%	42%	28%
Female	22,74,516	2,71,769	25,46,285
	74.5%	58.0%	72.3%
Transgender	403	91	494
	0.0%	0.0%	0.0%
Total	**30,53,691**	**4,68,821**	**35,22,512**

स्रोत : चतुर्थ अखिल भारतीय हस्तकरघा जनगणना

Table 17: Number of handloom workers household by income

By Income	Rural	Urban	Total
Less than 5000	18,83,747	2,25,778	21,09,525
	68.5%	57.0%	67.1%
5001-10000	6,85,615	1,38,406	8,24,021
	24.9%	34.9%	26.2%
10001-15000	1,24,456	16,053	1,40,509
	4.5%	4.0%	4.5%
15001-20000	25,774	4,215	29,989
	0.9%	1.1%	1.0%
20001-25000	14,196	3,271	17,467
	0.5%	0.8%	0.6%
25001-50000	11,492	8,246	19,738
	0.4%	2.1%	0.6%
50,000-1,00,000	2,547	316	2,863
	0.1%	0.1%	0.1%
Above 1,00,000	618	109	727
	0.0%	0.0%	0.0%
Total	**27,48,445**	**3,96,394**	**31,44,839**

स्रोत : चतुर्थ अखिल भारतीय हस्तकरघा जनगणना

रोजगार सृजन में महत्त्वपूर्ण भूमिका किंतु घटती संख्या - चतुर्थ अखिल भारतीय हस्तकरघा जनगणना के आँकड़ों से स्पष्ट होता है कि यह क्षेत्र कृषि के पश्चात ग्रामीण भारत में रोजगार का दूसरा

सबसे बड़ा स्रोत है, परंतु पिछले कुछ वर्षों में सक्रिय हथकरघों तथा बुनकर परिवारों की संख्या में लगातार गिरावट देखी जा रही है, जो चिंता का विषय है।

S.#	Category	HS Code	Product	2009-10 INR cr.	2010-11 INR cr.	2011-12 INR cr.	2012-13 INR cr.	2013-14 INR cr.	2014-15 INR cr.	2015-16 INR cr.	2016-17 INR cr.	2017-18 INR cr.	2018-19 INR cr.	2019-20 INR cr.	2020-21 INR cr.	2021-22 INR cr.	2022-23 INR cr.	2023-24 INR cr.	2024-25 INR cr.	2025-26 INR cr.
1	Fabrics	50079010	Other Woven Fabrics Of Handloom	11.32	40.07	16.02	4.57	4.22	4.57	77.38	94.14	77.06	73.46	98.32	82.15	68.07	71.95	57.71	25.46	19.68
2		51129050	Other Woven Fbrics Of Comd Wool Or Comd Fine Anml Hair Of Handloom	0.01	-	-	0.01	-	-	1.83	0.98	1.06	0.69	0.75	0.03	0.33	0.24	0.07	0.01	0.09
3		52083121	Sarees Of Handloom	3.57	0.88	1.52	4.76	-	-	-	-	-	-	-	-	-	-	0.00	0.00	0
4		52084121	Sarees Of Handloom	0.06	1.10	0.01	1.22	3.12	0.10	0.65	0.44	0.81	3.57	2.93	3.43	2.71	0.36	0.39	0.07	0.09
5		52084921	Real Madras Handkerchiefs Of Handloom	8.65	5.63	18.37	10.40	6.12	5.36	0.56	8.97	0.00	0.01	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00
6		52085920	Sarees Of Handloom	0.03	0.05	0.02	5.24	0.39	0.34	0.66	0.87	1.46	2.04	1.06	2.08	3.96	3.56	0.60	2.88	9.71
7		52091111	Dhoti Handloom	4.81	2.87	2.44	2.02	1.57	0.90	2.21	2.74	2.25	3.43	3.18	1.24	2.09	2.05	3.81	4.42	7.02
8		52091112	Saree Handloom	2.62	0.70	0.69	1.13	1.38	1.77	1.53	3.91	1.29	1.34	0.38	1.19	1.16	TTOP	2.42	2.79	2.05
9		52091113	Casement Handloom	0.16	0.16	0.12	0.00	-	0.01	0.02	0.27	0.06	0.38	0.02	0.00	0.15	0.20	0.23	0.00	0.00
10		52091114	Sheeting (Takia, Leopard Cloth & Othr Than Furnishing), Handloom	0.38	0.12	0.01	0.09	0.00	0.10	0.04	0.3	0.06	0.16	0.01	0.20	0.01	0.06	0.12	0.06	0.02
11		52091119	Other Fabrics Handloom	33.89	19.22	34.32	17.55	33.88	73.58	117.29	50.02	34.16	99.91	89.05	38.26	23.76	13.27	12.35	15.26	17.97
12		52085111	Lungis Of Handloom	1.46	0.53	5.05	15.85	5.86	11.48	26.89	17.32	5.84	11.43	6.67	2.81	5.93	8.80	2.13	1.89	2.20
13		58021900	Terry Towelling & Smlr Terry Fabrs, Handloom	0.13	0.30	0.00			0.01	2.22	1.66	0.14	0.11	0.52	3.64	0.06	0.06	0.06	0.03	0.00
14	Floor coverings	57024230	Carpets, Rugs And Mats Of Handloom	0.28	15.80	88.86	61.03	163.75	125.69	90.92	97.46	93.81	101.58	160.09	224.40	251.90	166.86	167.36	207.93	180.142
15		57050024	Cotton Durries Of Handloom (Including Chindi Durries, Cotton Chenille Durries, Rag Rug Durrie Printed Durries, Druggets)	12.01	38.06	98.72	112.79	240.39	205.02	177.06	155.16	87.16	88.59	93.43	164.53	247.01	236.29	177.36	151.55	128.3903
16		57050042	Mats And Mattings Including Bath Mats, Where Cotton Predominates By Weight, Of Handloom, Cotton Rugs Of Handloom	45.86	93.11	238.91	416.06	544.47	583.84	551.82	616.04	616.72	622.06	502.51	479.89	422.43	175.56	134.88	120.79	109.6168
17	Clothing Accessories	62141030	Scarves Of Silk, Handloom	0.64	2.17	32.89	66.83	54.56	89.03	156.00	123.96	80.79	114.65	146.26	61.46	43.61	106.06	105.99	146.34	374.89
18		62160020	Gloves, Mittens And Mitts Of Handloom	0.02	1.03	0.38	5.19	12.13	14.00	9.71	11.04	9.71	11.45	7.22	0.26	0.27	6.16	0.29	0.02	0.04
19	Madeups	63022110	Other Bed Linen, Printed, Of Cotton, Handloom	105.86	126.59	188.12	136.43	87.53	98.60	11.44	6.6	5.24	8.74	0.29	2.44	15.80	63.98	16.97	0.37	1.14
20		63025110	Other Table Linen, Of Cotton, Handloom	25.15	34.50	78.20	142.72	88.51	38.26	50.43	50.02	55.31	58.29	50.41	23.23	28.07	30.76	17.10	21.11	25.46
21		63026010	Toilet Linen & Kitchen Linen, Of Terry Towelling Or Similar Terry Fabrics, Of Cotton, Handloom	319.68	612.56	1091.36	946.41	75.38	64.86	141.71	171.82	127.26	106.85	73.32	13.77	14.95	11.29	14.15	38.84	53.94
22		63029110	Other Bed Linen, Table Linen, Toilet Linen, Kitchen Linen Of Cotton, Handloom	37.59	42.79	85.14	123.51	107.44	108.15	95.02	96.56	84.65	98.74	82.58	19.20	20.58	14.51	7.25	4.82	4.67
23		63041940	Bed Sheets And Bed Covers Of Cotton, Handloom	32.91	70.38	114.00	82.55	86.51	87.41	212.39	203.66	250.79	260.61	309.62	122.69	117.38	74.98	73.31	83.40	108.65
24		63049211	Counterpanes Of Handloom	1.91	3.26	4.71	1.02	0.68	2.39	0.94	0.73	0.83	1.94	0.82	0.20	0.70	0.07	0.14	0.02	0.23
25		63049221	Napkins Of Handloom	65.37	49.20	71.13	52.89	75.19	51.42	39.05	32.72	30.77	35.61	24.29	8.15	35.84	14.29	12.55	11.45	8.55
26		63049231	Pillow Cases And Pillow Slips Of Handloom	54.59	67.22	90.07	95.45	113.41	80.53	32.59	42.14	28.90	36.03	47.01	40.33	39.04	24.03	33.60	23.38	12.66
27		63049241	Table Cloth And Table Covers Of Handloom	161.27	157.46	133.17	180.00	134.08	219.71	133.66	131.92	114.72	116.68	78.09	28.44	40.60	50.11	32.83	28.46	28.33
28		63049281	Cushion Covers Of Handloom	154.20	129.11	107.11	132.34	174.50	236.37	165.41	176.92	167.28	173.61	138.14	121.48	140.30	100.23	82.38	73.99	70.46
29		63049291	Other Furnishing Articles Of Handloom	79.73	108.53	97.94	145.82	187.77	151.41	214.38	272.55	317.34	301.87	300.40	252.59	340.94	222.97	177.19	176.66	152.54
30		63049991	Other Furnishing Articles Of Silk, Handloom	9.45	25.55	5.49	3.54	5.72	3.43	3.94	0.71	1.02	0.73	0.58	0.71	1.09	1.99	2.80	3.85	1.78
31		63049992	Other Furnishing Articles Of Wool, Handloom	3.24	4.37	5.00	6.61	14.04	8.25	10.39	13.79	13.98	16.13	8.54	9.32	16.33	11.66	4.73	6.62	7.73
32		63071030	Floor Cloth & The Like Of Cotton, Handloom	3.85	2.43	39.01	14.69	24.42	37.36	20.04	20.36	23.00	26.72	20.09	13.37	15.16	10.54	7.79	10.16	9.17
			Grand Total	1282.81	1974.99	2623.86	2611.87	2333.11	2246.46	2353.32	2392.21	2266.16	2392.39	2348.33	1644.78	1987.63	1443.987	1146.33	1178.83	1333.86

स्रोत : हस्तकरघा निर्यात संवर्धन परिषद

निर्यात प्रदर्शन में अस्थिरता

DGCIS तथा हस्तकरघा निर्यात संवर्धन परिषद के आँकड़ों के विश्लेषण से पता चलता है कि भारतीय हस्तकरघा उत्पादों का निर्यात मूल्य वर्ष-दर-वर्ष स्थिर नहीं रहा है। गोपान, केके एवं बालन के अध्ययन में उजागर संरचनात्मक विघटन (structural break) इस बात की पुष्टि करता है कि वैश्विक आर्थिक झटकों का सीधा प्रभाव निर्यात मात्रा पर पड़ता है।

क्षेत्रीय असमानता स्पष्ट

देब के अध्ययन के अनुसार सभी राज्यों की निर्यात प्रतिस्पर्धात्मकता एक समान नहीं है—पश्चिम बंगाल, तमिलनाडु तथा उत्तर प्रदेश जैसे राज्य अपेक्षाकृत बेहतर प्रदर्शन करते हैं, जबकि अन्य राज्य वैश्विक बाज़ार में अपनी उपस्थिति दर्ज कराने हेतु संघर्ष कर रहे हैं।

सरकारी सहायता की सीमित प्रभावशीलता

सिंह एवं गौतम के अध्ययनों से यह स्पष्ट होता है कि निर्यात सहायता योजनाएँ तभी सार्थक सिद्ध होती हैं जब निर्यातक संगठनों की आंतरिक क्षमता (प्रबंधकीय दक्षता, तकनीकी अनुकूलन) भी सुदृढ़ हो; अकेले वित्तीय सहायता निर्यात वृद्धि सुनिश्चित नहीं कर पाती।

वैश्विक बाज़ार में सीमित हिस्सेदारी

विश्व व्यापार संगठन तथा विश्व बैंक के वैश्विक व्यापार आँकड़ों की तुलना करने पर स्पष्ट होता है कि विश्व वस्त्र व्यापार में भारत की हस्तकरघा उत्पादों की हिस्सेदारी अपेक्षाकृत कम है, जबकि इसमें सांस्कृतिक विशिष्टता के कारण वृद्धि की पर्याप्त संभावनाएँ मौजूद हैं।

रचनात्मक अर्थव्यवस्था एवं सततता का उभरता महत्त्व

UNCTAD की रिपोर्ट तथा दास एवं स्वैन के अध्ययन के अनुसार, वैश्विक स्तर पर उपभोक्ता अब पर्यावरण-अनुकूल तथा सांस्कृतिक विरासत आधारित उत्पादों को प्राथमिकता दे रहे हैं, जो भारतीय हस्तकरघा उत्पादों हेतु एक नया एवं आशाजनक निर्यात अवसर सिद्ध हो सकता है, बशर्ते सतत उत्पादन प्रक्रियाओं को अपनाया जाए।

निष्कर्ष

भारतीय हस्तकरघा उद्योग केवल एक आर्थिक गतिविधि नहीं, बल्कि सदियों की परंपरा, कला और श्रम की जीवंत विरासत है, जो आज भी लाखों बुनकर परिवारों की रोज़ी-रोटी का सहारा बना हुआ है। प्रस्तुत अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि भारतीय हस्तकरघा एवं हस्तनिर्मित वस्त्रों की वैश्विक बाज़ार में एक विशिष्ट पहचान अवश्य है, किंतु इस पहचान को सतत निर्यात वृद्धि में परिवर्तित करने के मार्ग

में अनेक बाधाएँ विद्यमान हैं। द्वितीयक आँकड़ों तथा उपलब्ध साहित्य की समीक्षा से यह उजागर होता है कि निर्यात प्रदर्शन कभी स्थिर नहीं रहा—वैश्विक आर्थिक उतार-चढ़ाव, प्रतिस्पर्धी देशों की आक्रामक मूल्य नीति, तथा घरेलू स्तर पर संरचनात्मक कमजोरियाँ इस क्षेत्र की निर्यात क्षमता को बार-बार प्रभावित करती रही हैं। साथ ही, यह भी स्पष्ट हुआ कि सरकारी नीतियाँ एवं निर्यात सहायता कार्यक्रम तभी प्रभावी सिद्ध होते हैं जब बुनकर संगठन आंतरिक रूप से भी सक्षम हों—अर्थात केवल बाहरी सहायता पर्याप्त नहीं, आंतरिक क्षमता निर्माण भी उतना ही आवश्यक है। इसके अतिरिक्त, वैश्विक रचनात्मक अर्थव्यवस्था तथा सततता (sustainability) जैसे नए आयाम इस उद्योग के लिए नई संभावनाओं के द्वार खोल रहे हैं, बशर्ते इन्हें सही रणनीति के साथ अपनाया जाए। भारतीय हस्तकरघा उद्योग में वैश्विक स्तर पर अपनी साख और हिस्सेदारी बढ़ाने की अपार संभावनाएँ मौजूद हैं, परंतु इसके लिए समन्वित, दीर्घकालिक तथा बुनकर-केंद्रित दृष्टिकोण अपनाना अनिवार्य है।

सुझाव

1. डिज़ाइन नवाचार एवं ब्रांडिंग: पारंपरिक बुनाई कला में समकालीन डिज़ाइन प्रवृत्तियों का समावेश करते हुए हस्तकरघा उत्पादों की वैश्विक ब्रांडिंग को सुदृढ़ किया जाए, ताकि ये उत्पाद अंतरराष्ट्रीय बाज़ार में प्रीमियम पहचान बना सकें।
2. डिजिटल एवं ई-कॉमर्स सुदृढ़ीकरण: बुनकरों को सीधे वैश्विक उपभोक्ताओं से जोड़ने हेतु ई-कॉमर्स प्लेटफॉर्मों तथा डिजिटल विपणन कौशल में प्रशिक्षण दिया जाए, जिससे बिचौलियों की भूमिका कम हो और लाभ का उचित हिस्सा बुनकरों तक पहुँचे।
3. वित्तीय एवं संस्थागत सहायता: सहकारी समितियों तथा निर्यातक संगठनों को कम ब्याज दर पर ऋण, समय पर सब्सिडी तथा निर्यात प्रोत्साहन योजनाओं की सुगम पहुँच सुनिश्चित की जाए।

4. सतत एवं पर्यावरण-अनुकूल उत्पादन: वैश्विक सततता मानकों के अनुरूप प्राकृतिक रंगों, जैविक धागों तथा पर्यावरण-हितैषी प्रक्रियाओं को बढ़ावा देकर हस्तकरघा उत्पादों को अंतरराष्ट्रीय स्थायित्व-प्रमाणन (sustainability certification) से जोड़ा जाए।

हितों का टकराव: संबंधित लेखक, दूसरे लेखक की ओर से, पुष्टि करते हैं कि बताने लायक हितों का कोई टकराव नहीं है।

कॉपीराइट: © 2026 विवेक शर्मा, प्रोफेसर रक्षा सिंह लेखक अपने मूल काम का कॉपीराइट अपने पास रखते हैं और जर्नल को प्रकाशन के अधिकार देते हैं।

लाइसेंस: यह काम 'क्रिएटिव कॉमन्स एट्रिब्यूशन 4.0 इंटरनेशनल लाइसेंस' के तहत लाइसेंस-प्राप्त है। यह दूसरों को उचित श्रेय (एट्रिब्यूशन) के साथ इस काम को बांटने, रीमिक्स करने, बदलने और इस पर आधारित नया काम करने की अनुमति देता है, चाहे वह व्यावसायिक उद्देश्यों के लिए ही क्यों न हो। लेखकों को अपना काम संस्थागत रिपॉजिटरी, सोशल मीडिया या अन्य प्लेटफॉर्म पर पोस्ट करने की भी अनुमति है।

संदर्भ

विकास आयुक्त (हस्तकरघा). (2020). *चतुर्थ अखिल भारतीय हस्तकरघा जनगणना (2019–20)*. वस्त्र मंत्रालय, भारत सरकार.

वस्त्र मंत्रालय. (2025). *वार्षिक प्रतिवेदन 2024–25*. भारत सरकार

तिवारी, जी. (2018). *भारतीय वस्त्र उद्योग एवं हस्तकरघा.* जयपुर: राजस्थान हिंदी ग्रंथ अकादमी.

शर्मा, आर. (2021). *भारतीय हस्तशिल्प एवं हस्तकरघा उद्योग: चुनौतियाँ एवं संभावनाएँ.* नई दिल्ली: हिंदी माध्यम कार्यान्वयन निदेशालय.

सिंह, एस. (2019). *भारतीय हस्तकरघा उद्योग का आर्थिक अध्ययन.* नई दिल्ली: राधा पब्लिकेशन्स.

Deb, J. (2025). Examining regional export competitiveness of handloom products in India and its macroeconomic correlates. *Foreign Trade Review*. Advance online publication. https://doi.org/10.1177/23210222251362962

Singh, V. K., & Gautam, A. (2021). Structural relation of export assistance programme and export performance determinants: A study of handloom industry. *Foreign Trade Review, 56*(4), 451–468.

Singh, V. K., & Gautam, A. (2022). Structural investigation of export assistance and performance of handloom exporters. *Global Business Review, 21*(1).

Singh, V. K., & Gautam, A. (2022). Investigating the relationship between export antecedents and export performance of handloom industry. *Vision: The Journal of Business Perspective*. https://doi.org/10.1177/23197145221082853

Gopan, A., KK, J., & Balan, G. (2025). Does handloom export from India face a structural break? *South India Journal of Social Sciences, 23*(7), 51–55. https://doi.org/10.62656/SIJSS.v23i7.2261

Zohair, M. (2015). Policies, pattern and marketing determinants of handloom exports from India. *FOCUS: Journal of International Business, 2*(1), 22–52. https://doi.org/10.17492/focus.v2i1.6426

Pai, V. S., Vadivel, V., & Chakravarty, T. (1995). Handloom exports: Performance analysis of 80s and strategy for 90s. *SEDME (Small Enterprises Development, Management & Extension Journal), 22*(1), 39–49.

Das, A., & Swain, P. K. (2025). Sustainability of the handloom textile in India: Opportunities, challenges, and strategies. *TEXTILE, 23*(3–4), 598–616. https://doi.org/10.1080/14759756.2025.2509201

Sakthivel, S., & Hariharan, M. M. (2020). Export performance of handloom products in India. *International Journal of Research in Commerce and Management*.

Handloom Export Promotion Council. (2024). *Annual report 2023–2024*. Handloom Export Promotion Council.

Directorate General of Commercial Intelligence and Statistics. (2024). *Export statistics of India*. Ministry of Commerce and Industry, Government of India.

World Trade Organization. (2024). *World trade statistical review 2024*.

World Bank. (2024). *World development indicators*.

United Nations Conference on Trade and Development. (2024). *Creative economy outlook 2024*.